निर्णायकः जो सुसमाचार की माँग है

सुसमाचार निर्णायक अनिवार्यता की माँग करता है

पासबान क्रिस निकोल्स

हम वचन में सुसमाचार की माँग के अनुसार निर्णायक अनिवार्यता के सन्दर्भ में आगे बढ़ेंगे। अतः अपनी बाइबल में यूहन्ना का सुसमाचार निकालें, यूहन्ना 4:27, हम वहीं से शुरू करेंगे।

इससे पहले आइए हम वचन के लिए प्रार्थना करते हैं।

पिता, नैराश्य के स्थान में आप हमें जीवन देते हैं और परमेश्वर हम हताश लोग हैं। हमें आपसे सुनने की जरूरत है। हमें आपके वचन से सुनने की जरूरत है। हमें आपके अपने आत्मा से सुनने की जरूरत है प्रभु। मेरी प्रार्थना है कि जब हम आपके वचन की सम्पदा को देखते हैं, तो परमेश्वर आप हमारी आँखों को उस आवश्यकता के प्रति खोलें, उस आवश्यकता के प्रति जो आप चाहते हैं कि हम समझें। और मेरी प्रार्थना है कि आप स्पष्टता से हमसे बात करें। परमेश्वर, इस सत्य के साथ हम आगे चलने पाएँ। मसीह के नाम में माँगता हूँ। आमीन।

हम यूहन्ना 4:27 में हैं। हम आगे पढ़ने जा रहे हैं।

> *इतने में उसके चेले आ गए, और अचम्भा करने लगे कि वह स्त्री से बातें कर रहा है; तौभी किसी ने न पूछा, "तू क्या चाहता है?" या "किस लिए उससे बातें करता है?" तब स्त्री अपना घड़ा छोड़कर नगर में चली गई, और लोगों से कहने लगी, "आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया। कहीं यही तो मसीह नहीं है?" अतः वे नगर से निकलकर उसके पास आने लगे। इस बीच उसके चेलों ने यीशु से यह विनती की, "हे रब्बी, कुछ खा ले।" परन्तु उसने उनसे कहा, "मेरे पास खाने के लिए ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।" तब चेलों ने आपस में कहा, "क्या कोई उसके लिए कुछ खाने को लाया है?" यीशु ने उनसे कहा, "मेरा भोजन यह है कि अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूँ और उसका काम पूरा करूँ। क्या तुम नहीं कहते, 'कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं?' देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो कि वे कटनी के लिए पक चुके हैं। काटने वाला मजदूरी पाता और*

अनन्त जीवन के लिए फल बटोरता है, ताकि बोने वाला और काटने वाला दोनों मिलकर आनन्द करें। क्योंकि यहाँ पर यह कहावत ठीक बैठती है: 'बोने वाला और है और काटने वाला और।' मैंने तुम्हें वह खेत काटने के लिए भेजा जिसमें तुमने परिश्रम नहीं किया : दूसरों ने परिश्रम किया और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए।" उस नगर के बहुत से सामरियों ने उस स्त्री के कहने से यीशु पर विश्वास किया; क्योंकि उसने यह गवाही दी थी : 'उसने सब कुछ जो मैंने किया है, मुझे बता दिया।' इसलिए जब ये सामरी उसके पास आए, तो उससे विनती करने लगे कि हमारे यहाँ रह। अतः वह वहाँ दो दिन तक रहा। उसके वचन के कारण और भी बहुत से लोगों ने विश्वास किया। और उस स्त्री से कहा, "अब हम तेरे कहने ही से विश्वास नहीं करते; क्योंकि हम ने आप ही सुन लिया, और जानते हैं कि यही सचमुच में जगत का उद्धारकर्ता है।" (यहून्ना 4:27–42).

अत्यावश्यकता, शब्दकोष इसे अत्यधिक जरूरत, अनिवार्यता, दबाव इत्यादि के रूप में परिभाषित करता है। हमारी संस्कृति में हम अपने मोबाईल फोन पर 1 या 2 दबाने के द्वारा सामान्य और आवश्यक में अन्तर करते हैं। साधारण सुपुर्दगी के लिए 1 दबाएँ, ठीक? अत्यावश्यक सुपुर्दगी के लिए 2 दबाएँ। यह निर्णायक अत्यावश्यकता नहीं है।

सुनें भारत में एक सतावग्रस्त क्षेत्र में, हमारे मसीही भाइयों में से एक, अपनी अत्यावश्यकता के बारे में क्या कहता है। उसके कथन को सुनें। "इस संसार में हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता, यीशु मसीह के अलावा और कुछ भी हमें अनन्त खुशी नहीं देता है। इस जीवन के केवल कुछ वर्षों में ही हमें मसीह तथा एक–दूसरे की सेवा करने का सौभाग्य मिलता है। मृत्यु के बाद स्वर्ग सदा के लिए हमारा होगा, परन्तु सेवा के लिए यहाँ केवल थोड़ा सा समय है।" और इसे सुनें, "इसलिए, हमें अवसर गँवाना नहीं चाहिए।"

ऐसा प्रतीत होता है कि हम किसी तरह इस बात को भूल चुके हैं कि इस जीवन में क्या अनिवार्य है और इस जीवन में क्या अनिवार्य नहीं है। और यदि हमें इस तस्वीर को पाना है कि निर्णायक अनिवार्यता में सुसमाचार की क्या माँग है, तो हमें यह देखना होगा कि परमेश्वर का वचन इसे कैसे निर्धारित करता है। अतः पद 27 पर वापस जाएँ, और वहाँ एक छोटा वाक्य है और वहाँ लिखा है, "इतने में उसके चेले आ गए।" उसके चेले आ गए।

अब, वे गए कहाँ थे? यह जानने के लिए कि वे कहाँ गए थे आपको परिच्छेद के पिछले भाग के बारे में कुछ जानना होगा। आपको पद 1 को देखना होगा। मैं आपके लिए इसे पढ़ूँगा। *"फिर जब प्रभु को मालूम हुआ कि फरीसियों ने सुना है कि यीशु यूहन्ना से अधिक चेले बनाता और उन्हें बपतिस्मा देता है – यद्यपि*

यीशु स्वयं नहीं वरन् उसके चेले बपतिस्मा देते थे – तब वह यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला, और उसको सामरिया से होकर जाना अवश्य था।" (यूहन्ना 4:1–4).

और पृष्ठभूमि यह है कि यीशु और उसके चेले यहूदिया से बाहर निकल रहे हैं और वे उत्तर की ओर जा रहे हैं। वे गलील की ओर जा रहे हैं। अब बात यह है। दो संभावित कारण हैं। एक, वचन यहाँ प्रकट करता है। यह आपको एक प्रकार से छोटा साराँश देता है, परन्तु दो कारण। एक है वहाँ पहले से चल रहे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के कार्य हस्तक्षेप न करना। परन्तु दूसरा कारण है कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने धार्मिक अधिकारी वर्ग की रूचि को पहले ही जगा दिया था, और मसीह मूलतः उसे जारी रखने के बारे में सोच रहे थे, और इस शुरूआत के साथ, और बपतिस्मा और लोगों के मन परिवर्तनों और बदलती हुई परिस्थितियों के साथ, वह नहीं चाहते थे कि उनकी बढ़ती हुई प्रसिद्धि एक राजनैतिक खतरा बने।

यीशु निश्चित हैं, परेशान नहीं

आपको यहाँ जिसके बारे में सोचना है कि यीशु की यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के साथ चेले बनाने की प्रतिस्पर्धा में रूचि नहीं है। न ही राजनैतिक लड़ाई में उनकी रूचि है। अब हमारे लिए संभवतः यहाँ एक वचन है, और हम इसके पार जाने वाले हैं, परन्तु ये उसके उद्देश्यों से भटकाने वाले होंगे।

यीशु और उसके चेले उत्तर की ओर जा रहे हैं। वे ऊँचे मार्ग पर हैं। आप अध्याय 4, पद 4 में इसे देख सकते हैं। यूहन्ना इसमें एक छोटा सा कथन जोड़ता है, परन्तु यह वास्तव में महत्वपूर्ण है और यह कहता है, "उसे सामरिया से जाना अवश्य था," किसी भी क्षेत्र में नहीं, बल्कि तिरस्कृत मिश्रित नस्ल वाले लोगों के क्षेत्र से। यहूदी उन्हें यही कहते थे, तिरस्कृत मिश्रित नस्ल के लोग।

हम इस पर विस्तार में नहीं जायेंगे, परन्तु इतना कहना पर्याप्त है कि एक–दूसरे के प्रति यह घृणा पुराने नियम के समयों में नहेम्याह से भी पहले की है। मैं चाहता हूँ आप जाने कि आगे यूहन्ना के सुसमाचार में; फरीसी कहते हैं कि यीशु में "दुष्टात्मा" है और उसे "सामरी" कहते हैं। अतः एक–दूसरे को सामरी कहना यहूदी संस्कृति की ओर से सामरी संस्कृति के लिए एक शुभकामना नहीं थी। यह यहूदियों द्वारा तिरस्कृत जाति थी।

परन्तु मैं चाहता हूँ आप यह करें। इस पद को यात्रा करने दें। इसे मध्य–पूर्व से अपने नगर में आने दें। क्या हमारे बीच में तिरस्कृत जातियाँ, सामाजिक–आर्थिक समूह, तिरस्कृत लोग नहीं हैं? क्या हमारे अन्दर

पूर्वाग्रह नहीं हैं? परन्तु यीशु कुछ अलग दिखाते हैं। यीशु लोगों के मतों और पूर्वाग्रहों की पूर्णतः उपेक्षा करते हैं।

वह वहाँ से होकर जाते हैं। वहाँ रूकते हैं। संभवतः वह किसी उद्देश्य से वहाँ रूकते हैं। और हमारे बारे में क्या? आपके और मेरे बारे में? मैं आपसे यह पूछना चाहता हूँ। क्या मैं या आप अपना नाक पकड़कर किसी तरह वहाँ से निकल जाते? यह सोचते हुए कि, "किसी न किसी तरह यहाँ से निकलना है।" आइए हम इसका सामना करें। हम ऐसे क्षेत्रों से गुजरते हैं जो हमारे लिए आरामदायक नहीं हैं, ऐसी पृष्ठभूमियों से जो आरामदायक नहीं हैं, ऐसी परिस्थितियों से जो आरामदायक नहीं है। जब कोई सन्दर्भ हमारे आराम के स्तरों को चुनौती देता है, हमारी सामाजिक स्थिति को चुनौती देता है, हमारी संस्कृति को चुनौती देता है, तो क्या हम वहाँ से अपने नाक को पकड़कर निकल जायेंगे?

आपके बारे में क्या? आपके बाहरी स्वरूप और आपकी बोली के बारे में क्या? आपकी महान सामाजिक पृष्ठभूमि, आपके अतुल्य सामाजिक स्तर, या फिर उसके अभाव के बारे में क्या? क्या होता यदि यह सब हमारी खातिर पिता की आज्ञा मानने में मसीह के आड़े आ जाता? हम नाश हो जाते।

आज आप अपनी जगहों पर और मैं अपने स्थान में, केवल उसके अनुग्रह के कारण हैं। इसके बिना हम नाश हो गए होते। जैसे सी.एस. लुईस स्वर्ग के तीन आश्चर्यों के बारे में बात करते हैंः कौन वहाँ है, कौन वहाँ नहीं है, आप वहाँ हैं। यह एक अच्छा दृश्य नहीं होगा।

आइए हम पीछे पद 6 को देखते हैं, *"और याकूब का कुआँ भी वहीं था। अतः यीशु मार्ग का थका हुआ उस कुएँ पर योंही बैठ गया।"* यह भोजन का समय था। संभवतः दोपहर का समय, पद 8 इसके बारे में बताता है, *"उसके चेले तो नगर में भोजन मोल लेने को गए थे।"* अब हम वहाँ पर एक स्वाभाविक भूख और उसके स्वाभाविक प्रत्युत्तर को देखते हैं।

और इसमें गलत क्या है? बहुत से लोग हमसे कहेंगे कि हम पहले अपनी लालसाओं को पूरा कर लें। कलीसिया में आपके साथी विश्वासी, छोटे समूह के लोग भी कहेंगे, "तुम्हें पहले अपना ख्याल रखना चाहिए," वे अच्छा सोचकर ही ऐसा कहते हैं। परन्तु मसीह हमें दिखाते हैं कि उसके लिए उस समय वह जहाँ पर है, अब कार्य करना जरूरी है।

बात यह है। हमारा जीवन हमेशा केवल अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के बारे में ही नहीं हो सकता है। यदि हमें परमेश्वर की इच्छा को मानना है तो हमेशा अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों को ही पूरा नहीं कर सकते हैं। इसके बारे में पवित्रशास्त्र में दूसरे स्थान पर भी बताया गया है, फिलिप्पियों 2:1–11. उसके बीच में लिखा है, "विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो।" (फिलि. 2:3). आपसे भी महत्वपूर्ण।
और हमारे बारे में क्या? आइए हम एक मिनट के लिए निर्णायक अनिवार्यता के बारे में बात करते हैं। लोगों से यह कहने का प्रयास करें कि वे खोए हुओं से बातचीत करने के लिए जहाँ हैं वहीं पर रहकर अपने एक समय के भोजन को त्याग दें। एक समय के भोजन को त्याग दें। या हम इसे थोड़ा और नीचे ले आते हैं। हम कहें, "क्यों ने हम अपने भोजन में थोड़ी देर करें ताकि हम खोए हुए लोगों से बात कर सकें?"

अब यह हमारी अनिवार्यता की तस्वीर है। हम यह करते हैं। हम निरन्तर, निरन्तर अपनी ही जरूरतों के बारे में चिन्तित रहते हैं। और आप पूछ रहे हैं, "क्रिस, क्या कुछ खाने की इच्छा करना बुरी बात है?" नहीं, इसमें कोई बुराई नहीं है। परन्तु क्या आप जानते हैं? पवित्रशास्त्र कई स्थानों पर स्पष्ट करता है कि केवल अपनी जरूरतों को पूरा करना ही एकमात्र बात नहीं है।

यहाँ यीशु हैं। उनके साथ उनका सेवकाई दल है। सेवकाई दल के लोग स्थानीय बाजार में खाना लेने के लिए गए हैं। और इस बीच, यीशु वहाँ बैठ जाते हैं जहाँ सेवकाई होती है, और यह वहीं है जहाँ कहीं यीशु है। यह हमारे लिए एक वचन है। आज आप जहाँ हैं, कल आप जहाँ होंगे, इसके लिए आपको किसी चिन्ह की आवश्यकता नहीं है। आप जहाँ हैं। वहीं सेवकाई होती है।

आइए जल्दी से पद 27 पर चलते हैं। अब आप जानते हैं कि चेले कहाँ गए थे। वे भोजन लेने गए थे। कहानी में वापस आते हैं। इसे देखें। चेले याकूब के कुएँ पर वापस लौटते हैं। वे मार्ग पर चल रहे हैं। पूरा झुण्ड है। किसी कारण से मैं देख सकता हूँ कि पतरस उन सबके आगे चल रहा है। और संभवतः जब वे अन्तिम वृक्ष के पार आते हैं, वह संभवतः रूककर अपना हाथ आगे बढ़ाता है और उनकी ओर संकेत करता है जो उसके पास आ गए थे। क्या तुम वह देख रहे हो?

उसने संभवतः अपना चेहरा पीछे करके कहा, "वह एक स्त्री से बात कर रहा है।" उसने अरामी भाषा में कहा होगा, लेकिन कुछ ऐसा ही कहा होगा। यह घोर अपयश की बात थी, एक रब्बी अनजानी स्त्री से बात नहीं कर सकता था, विशेषतः जब उसका पति उसके साथ न हो। "वह एक स्त्री से बात कर रहा है।"

यीशु निश्चित हैं, भयभीत नहीं

यहाँ हम मसीह को देखते हैं। और उसकी निर्णायक अनिवार्यता को जो खोए हुए व्यक्ति की खातिर हमारी सारी सांस्कृतिक, धार्मिक परम्पराओं को पार कर जाती है।

यह विचार दूसरे स्थानों में भी आता है, प्रेरितों की पत्रियों में कई जगह, कुलुस्सियों 2:8, *"चौकस रहो कि कोई तुम्हें उस तत्व–ज्ञान और व्यर्थ धोखे के द्वारा अपना अहेर न बना ले, जो मनुष्यों की परम्पराओं और संसार की आदि शिक्षा के अनुसार तो है, पर मसीह के अनुसार नहीं।"* मनुष्यों की परम्पराओं, संसार के सिद्धान्तों के अनुसार या मसीह के अनुसार।

अतः चेले खामोश खड़े हैं। वे चुपचाप देख रहे हैं। हम पद 28 पर हैं, सामरी स्त्री दिन के बिल्कुल गलत समय पर कुएँ पर है। यदि आपने कभी इस परिच्छेद का अध्ययन किया है तो आप इसे समझते हैं। वह अपने मिट्टी के घड़े को वहीं रखकर, चुपचाप तेजी से वापस अपने नगर की ओर चली जाती है। वह एक अत्यावश्यक उद्देश्य से जा रही है।

अब यह बिल्कुल सीधा है, क्या नहीं? यीशु से मिलना, घड़े को छोड़ना, अब सार्वजनिक सेवकाई का आरम्भ। वह यही करती है। कितना आसान है यह? कोई पाठ्यक्रम नहीं, कोई सेमिनारी, कोई सिद्धान्त नहीं। वह क्या सोच रही थी? हमारे लिए यहाँ कुछ है।
वाचमैन नी नामक एक व्यक्ति है जिसका जन्म 1903 में हुआ और 1972 में मृत्यु हो गई। वह एक चीनी भाई है, जिसने विश्वास के कारण अपने जीवन के अन्तिम 15 वर्ष चीनी जेल में बिताए। वह कहते हैं। "पवित्र आत्मा हमें मसीह को दिखाता है और हम उस पर विश्वास करते हैं। फिर तुरन्त, हमारी तरफ से बिना किसी कार्य के, उसके साथ एकता का जीवन आरम्भ हो जाता है।" यह इतना आसान है।

उसकी अत्यावश्यकता हमारी अत्यावश्यकता बनती है। मनुष्यों की परम्पराओं के लिए उसकी उपेक्षा, मनुष्यों के पूर्वाग्रहों के लिए उसकी उपेक्षा, हमारे लिए भी वही उपेक्षा बनती है, यह उसके साथ एकता का जीवन है। मैं सेमिनारी को ठोकर नहीं मार रहा हूँ। परन्तु, वाचमैन नी उसी पृष्ठ आगे कुछ और कहते हैं। "क्योंकि सिद्धान्त को समझना और परमेश्वर को जानना दोनों पूर्णतः अलग–अलग बातें हैं।" हमारे बारे में क्या?

यूहन्ना 17:3, *"और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें।"* हम यही चाहते हैं। हम परमेश्वर को जानना चाहते हैं। निर्णायक अनिवार्यता इससे नहीं आती कि हम क्या जानते हैं। यह केवल इससे आती है कि हम किसे जानते हैं।

और इस बीच, आपके सामने यह सेवकाई दल है, और जब यीशु इस स्त्री से अपनी बात समाप्त करते हैं तो ये लोग अपने खुले मुँहों को बन्द करते हैं। और वे क्या करते हैं? वे यीशु से अनुरोध करने लगते हैं, "रब्बी, कुछ खा ले।" आप संभवतः उन्हें देख सकते हैं। यीशु जिस असहज अवस्था में उसके कारण वे अपना पसीना पोंछ रहे हैं।

और यह समय है। यीशु वहाँ विस्फोट करते हैं। वह कहते हैं, "मेरे पास खाने के लिए ऐसा भोजन है जिसे तुम नहीं जानते।" (यूहन्ना 4:31). अब कुछ और ड्रामा। "मेरा भोजन, मेरे भोजन के बारे में तुम कुछ नहीं जानते।" और वे उसकी ओर देख रहे हैं। वे एक–दूसरे को देख रहे हैं। वे जमीन को देख रहे हैं। वह अपने कथन को पूरा करते हैं, वह कहते हैं, "सन्तुष्टि।" वह कह रहे हैं, "सन्तुष्टि, भोजन, भरपेट भोजन। यह मेरे पास पहले से ही है।" मसीह यही कह रहे हैं।

यहा कहाँ से मिलता है। यह परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने से मिलता है। यह 4:34 में है। यह हमारा जीवन उसके जीवन के अनुरूप बनने से आता है। इच्छा कहाँ पाई जाती है? शुरूआत के लिए, यह परमेश्वर के वचन में पाई जाती है। "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा।" यह मत्ती 4:4 में है। यह व्यवस्थाविवरण 8:3 से लिया गया कथन है।

अतः यदि व्यवस्थाविवरण 8:3 और मत्ती 4:4 दोनों यह कहते हैं कि उसकी इच्छा है कि हम जीएँ, कि हम उसके वचन पर जीवित रहते हैं, तो यह वचन आज हमारे लिए है। यह उसकी इच्छा है, इस वचन में उसकी इच्छा, इस समय उसकी इच्छा, इस समय उसका वचन।

भजन 40:8, "हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ; और तेरी व्यवस्था मेरे अन्तःकरण में बसी है।" यीशु, व्यवस्था, भविष्यद्वक्ताओं के वचनों को पूरा करने वाला, वह स्वयं कहता है, उसका भोजन परमेश्वर की इच्छा पूरी करना है। तो सवाल यह हैः यदि उसका जीवन हमारे अन्दर है, तो हमें भी यही करने से, उसकी इच्छा पूरी करने से सन्तुष्टि क्यों नहीं मिलती? हमें सन्तुष्टि वहीं से मिलती है।

हम अपनी सन्तुष्टि यहाँ पाते हैं। आइए इसे लागू करें। जब हम हमारे जीवन को बरबाद करने वाली बातों को छानकर निकालते हैं, और हम उसके द्वारा अपने वचन में दिखाए गए कार्य को करते हैं। और जब यीशु इस समय अपने चेलों को सिखा रहे हैं, पृष्ठभूमि में वह सामरी स्त्री सारे नगरवासियों को बता रही है कि वह इस यीशु के बारे में क्या सोचती है।

वह उससे मिली और उसकी सच्चाई और उसके तरस से चकित रह गई। वह सोच रही है कि वही है। वही है जिसकी सामरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। वही है जिसकी यहूदी प्रतीक्षा कर रहे हैं। और इसे वह संक्षेप में इस प्रकार बताती है, "मैं ने उसे पा लिया है जिसकी मैं जीवन भर से खोज में थी।"

पद 34 यह बताता प्रतीत होता है जैसे कि यीशु कह रहे हों कि इसी प्रकार हमारी देह भोजन की लालसा करती है और हमारी आत्मा परमेश्वर की इच्छा पूरी करने की लालसा करती है। हम तब तृप्त होते हैं जब हम उसके पीछे चलते हैं जो सारे भोजन का स्रोत है, चाहे भौतिक हो या अन्यथा। अतः यीशु एक बात को समझाने के लिए भोजन की सेवकाई का प्रयोग कर रहे हैं। पृष्ठभूमि में, यह एक स्त्री, इसे सुनें, जिसकी इतनी अच्छी साख नहीं है वह मसीह के बारे में बताकर पूरे गाँव में हलचल मचा रही है। अब वह तृप्त हो रही है और इससे उसे सन्तुष्टि मिल रही है जैसी कोई मनुष्य उसे कभी नहीं दे सकता। जब हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं तो हम तृप्त होते हैं। यहाँ यही बताया गया है।

यहाँ पर हम थोड़ी और समझ प्राप्त करते हैं। पद 35 को देखें। *"क्या तुम नहीं कहते, कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं?"* इसका क्या अर्थ है? वचन में इसके बहुत से सन्दर्भ हैं कि कटनी स्पष्टतः न्याय की तस्वीर है, हिसाब देने की तस्वीर।

एक नजर डालें, पुराना नियम, योएल 3:13 पर आएँ, *"हँसुआ लगाओ, क्योंकि खेत पक गया है। आओ दाख रौंदो, क्योंकि हौज भर गया है। रसकुण्ड उमण्डने लगे, क्योंकि उनकी बुराई बहुत बड़ी है।"* यह एक भविष्यद्वाणी है। यह आगे निर्णय की तराई के बारे में बताती है। यह आने वाले न्याय की तस्वीर है।

आइए हम प्रकाशितवाक्य पर चलते हैं। प्रकाशितवाक्य 14:15, इसे सुनें, *"फिर एक और स्वर्गदूत ने मन्दिर में से निकलकर उससे, जो बादल पर बैठा था, बड़े शब्द से पुकारकर कहा, अपना हँसुआ लगाकर लवनी कर, क्योंकि लवने का समय आ पहुँचा है, इसलिए कि पृथ्वी की खेती पक चुकी है। अतः जो बादल पर बैठा था उसने पृथ्वी पर अपना हँसुआ लगाया, और पृथ्वी की लवनी की गई।"* (प्रकाशितवाक्य 14:15–16).

कटनी, न्याय, लेखा देना। परन्तु इस सन्दर्भ में, यूहन्ना 4 के सन्दर्भ में, कटनी के बारे में यीशु के शब्द कुछ और भी बताते हैं। वे अच्छे फल को एकत्रित करने के बारे में बताते हैं, आशीषों की पूर्णता जिनकी प्रतीक्षा की जा रही थी।

यशायाह 9:3 इसे इस प्रकार कहता है, *"तू ने जाति को बढ़ाया, तू ने उसको बहुत आनन्द दिया; वे तेरे सामने कटनी के समय का सा आनन्द करते हैं, और ऐसे मगन हैं जैसे लोग लूट बाँटने के समय मगन रहते हैं।"*

मत्ती 9:38, जहाँ यीशु को खेत का स्वामी कहा गया है, यीशु कहते हैं, "क्या तुम्हारे पास यह पुरानी यहूदी कहावत नहीं है, जब काम की बात हो, आत्मिक हलचल की बात हो, तो हर बात के लिए एक ही उत्तर। अपने समय का आनन्द लो, क्योंकि कटनी में तो अभी कम से कम चार महीने और बाकी हैं। इसलिए आराम करो।"

यीशु समर्पित है, विभाजित नहीं

और हम भी ऐसा कहते हैं, क्या नहीं? हम अपने शब्दों से ऐसा नहीं कहते हैं। हम अपने कार्यों के द्वारा खामोशी से इसे कहते हैं। यह ऐसे चलता है। मुझे आत्मिक जीवन में परिपक्वता की जरूरत है और फिर मैं अपने विश्वास को दूसरों को बताऊँगा। जब मेरे बच्चे बड़े हो जायेंगे तो यह काम ज्यादा अच्छी तरह होगा। मैं अपने आप पूरी तरह परमेश्वर के काम में समर्पित कर सकता हूँ।

या हम कहते हैं। मैं तब तक प्रतीक्षा करना चाहता हूँ जब तक कि मेरे पास अच्छा निवेश न हो जाए और नौकरी छोड़ते समय मुझे एक अच्छी रकम न मिले। तब मैं अपने आपको पूरी तरह परमेश्वर की इच्छा के लिए समर्पित कर सकता हूँ। हम यही करते हैं। हम इसी तरह इस बात को कहते हैं कि कटनी में अभी चार महीने शेष हैं। यह यीशु मसीह की निर्णायक अनिवार्यता नहीं है। <u>यीशु की निर्णायक अनिवार्यता हमारी नौकरी की योजनाओं और हमारी व्यक्तिगत समय–सारणियों के परे है।</u>

"क्या तुम नहीं कहते, कटनी होने में अब भी चार महीने पड़े हैं? देखो, मैं तुम से कहता हूँ, अपनी आँखें उठाकर खेतो पर दृष्टि डालो।" (यूहन्ना 4:35). पद 35 और 36 के बीच अनकहे सन्देश को देखें। कटनी अब है।

और आप देखते हैं चेले इस समय संभवतः दुविधा में हैं, "उसने बात बदल दी। उसने बात बदल दी। वह भोजन के बारे में बात कर रहा था और अब नजरों के बारे में बात कर रहा है।" अपनी आँख उठाकर खेतों पर दृष्टि डालो। वे कटनी के लिए पक चुके हैं।" यीशु यही कह रहे हैं। और यीशु मूलतः कह रहे हैं, "यदि तुम मेरे नजरिए से देखोगे, तो कुछ नया देखोगे।"

अब आपके लिए थोड़ी जानकारी; यह कुआँ गेरिजीम पहाड़ के नीचे है, और वे संभवतः पूरे गाँव को वहाँ से देख सकते हैं, उस समय के हल्के रंग के वस्त्र चलते हुए उनकी ओर आ रहे हैं। और जब पद कहता है कि खेत कटनी के लिए पक चुके हैं तो संभवतः इन्हीं को देख कर कहा गया है कि फसल पक चुकी है।

और ये लोग मसीह और उसके चेलों के पास क्यों आ रहे हैं? वे लोग उसे कुएँ के पास क्यों आ रहे हैं जहाँ वे बैठे थे? कारण यह है कि वे उस स्त्री की गवाही के कारण आ रहे हैं जिसने अपनी सार्वजनिक सेवकाई अभी आरम्भ की है। यह केवल दर्शन नहीं है; यह प्रयोग है। सुसमाचार की अनिवार्यता के साथ देखने का परिणाम कार्य होता है।

भाई अन्द्रियास नामक एक व्यक्ति है। वे ओपन डोर्स के संस्थापक हैं। ओपन डोर्स मसीही भाइयों और बहनों का एक समूह है जो वर्षों से उन स्थानों में सुसमाचार पहुँचाने का प्रयास करते आ रहे हैं जो मसीह के सुसमाचार का विरोध करते हैं, जो स्थान सुसमाचार के लिए प्रतिबंधित हैं। सत्तर वर्ष की आयु में वे कहते हैं, "दर्शन वह है जिसे हर कोई देखता है, परन्तु सोचना वह जिसे और कोई नहीं सोचता, और करना वह है जिसे और कोई नहीं करता।" सुसमाचार की अनिवार्यता के साथ देखने का परिणाम कार्य होता है।

पद को देखें। शब्द सटीक हैं, *"काटने वाला मजदूरी पाता और अनन्त जीवन के लिए फल बटोरता है।* (यूहन्ना 4:36). यीशु ने बार–बार हमारे जीवनों के बारे में, फल के बारे में, और कटनी के बारे में बात की। कटनी, जो हमने कुछ पल पहले कहा, तब है जब वास्तविक परिणाम निकलते हैं। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि दाखलता कैसी दिखाई देती है। सवाल यह है कि फल कैसा है।

पौलुस इसके बारे में बात करता है, रोमियों 1, 11 के पास, *"क्योंकि मैं तुम से मिलने की लालसा करता हूँ कि मैं तुम्हें कोई आत्मिक वरदान दूँ जिससे तुम स्थिर हो जाओ; अर्थात् यह कि जब मैं तुम्हारे बीच में*

होऊँ, तो हम उस विश्वास के द्वारा जो मुझ में और तुम में है, एक दूसरे से प्रोत्साहन पाएँ। हे भाइयो, मैं नहीं चाहता कि तुम इससे अनजान रहो कि मैं ने बार–बार तुम्हारे पास आना चाहा, कि जैसा मुझे दूसरी अन्यजातियों में फल मिला, वैसा ही तुम में भी मिले, परन्तु अब तक रोका गया।" (रोमियों 1:11–13).

इन शब्दों को सुनें, *"मैं यूनानियों और अन्यभाषियों का, और बुद्धिमानों और निर्बुद्धियों का कर्जदार हूँ। अतः मैं तुम्हें भी जो रोम में रहते हो, सुसमाचार सुनाने को भरसक तैयार हूँ। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिए कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिए, पहले तो यहूदी फिर यूनानी के लिए, उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। क्योंकि उसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से और विश्वास के लिए प्रकट होती है; जैसा लिखा है, 'विश्वास से धर्मी जन जीवित रहेगा।'"* (रोमियों 1:14–17). कटनी ऐसे ही होती है। आपका विश्वास, मेरा विश्वास – यह इसी प्रकार होती है।

यीशु का निश्चय हमारे आनन्द की ओर ले जाता है

यूहन्ना के अभिलेख में, पद 36 में, लिखा है कि हमें अभी मजदूरी मिलती है। वह वास्तव में अपने बारे में बात कर रहा है। यीशु यही कह रहे हैं। दूसरे शब्दों में – परिणाम देखना चाहते हो? वे इसी समय इधर को आ रहे हैं। परन्तु वह हमारे बारे में भी बात कर रहे हैं। आखिर, यह उसका खेत है। हमें अभी मजदूरी मिलती है। हमें आने वाले जीवन में प्रतिफल मिलेगा। यह उसका खेत है। वह कार्य करता है। हम उसकी कटनी में भाग लेते हैं।

मैं नहीं चाहता कि आप इससे चूकें। न्याय के अतिरिक्त उत्सव भी है। केवल न्याय नहीं, केवल इकट्ठा करना नहीं, एक–दूसरे से आने वाला आनन्द भी है। जब हम खेत में काम करते हैं, यह उनके साथ उत्सव मनाने की तैयारी है जो हमसे युगों पहले जा चुके हैं, जिन्होंने अपने जीवन दे दिए ताकि फसल बढ़ती रहे।

यीशु भी इसे कहते हैं। वह कहते हैं, "इन लोगों के द्वारा जिन्हें तुम जानते तक नहीं।" हमें पद यह नहीं बताया गया है कि वे लोग कौन हैं जिन्होंने बीज बोया है। अब आप किसी दूसरे की कठिन मेहनत की आशीष को काट रहे हैं। वे इस दिन को देखना चाहते थे। मसीह कहते हैं तुम्हें समझना है कि यह एक उत्सव है। <u>यह कटनी स्वयं परमेश्वर के साथ का एक जश्न है।</u>

यदि कोई बीज बोया जाता है और यदि कोई कटनी है, तो परमेश्वर ही है जो इसे हमारे द्वारा कर रहा है। यदि पुराने समय के संतों ने बोया है, और यदि हम कटनी काटते हैं, यह सब इस कारण है कि खेत परमेश्वर का है। वह अब भी फसल काट रहा है।

अतः जो सवाल मैं आपके सामने रखन चाहता हूँ, जिसके बारे में हमें सोचना हैः हमारे जल्दी बोने का, हमारे जल्दी काटने का प्रारूप क्या है? या आखिर क्या यह जरूरी है? तथ्य यह है कि खेत में घूमते तो हैं परन्तु हम बहुत विरले ही परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें इसमें काम पर लगाए। हम विरले ही यह पूछते हैं। और यह सताव नहीं है जिसने हमारी आवश्यक धड़कन को रोक दिया है। शायद हमारी संपन्नता, शायद हमारा आराम, इसी ने कटनी के यथार्थ से हमारा ध्यान हटा दिया है। जॉन स्टॉट कहते हैं, "आज सुसमाचार प्रचार के विरूद्ध सबसे बड़ी एकमात्र रूकावट संभवतः हमारे अपने आत्मिक अनुभव की गुप्त निर्धनता है।" हम सबको जल्दी है, ठीक। हम सबको यह जानने की जल्दी है कि हमारे पास कितना धन है, या कम से कम हमारे पास कितना धन प्रतीत होता है। हमें जल्दी है कि दूसरे लोग जानें हमारी पसन्द कितनी अच्छी है। हमें यह जानने की जल्दी है कि हमारे बच्चे बेसबॉल, बास्केटबॉल और फुटबॉल में कितने अच्छे हैं। हमें जल्दी है।

हमें जल्दी है हम एकत्रित करते हैं और हम सब कुछ खर्च कर देते हैं। हम कतार में खड़े होते हैं। सबसे पहले आईफोन लेने के लिए सारी रात जागते हैं। हम मॉल के बन्द दरवाजों पर इन्तजार करते हैं ताकि हम सबसे पहले काउन्टर से सामान खरीद सकें। इन सबके बारे में हमें जल्दी है।

<u>हमारा जीवन भरा हुआ प्रतीत हो सकता है, परन्तु हम पूर्णतः खाली हैं।</u> हे परमेश्वर, क्या आप हमें वास्तविक सन्तुष्टि से भरेंगे? क्या आप हमें अपने जीवन के द्वारा निर्देशित करेंगे?

यहाँ एक और वचन है। इससे न चूकें। यह वचन आज की हमारी मानसिकता के लिए है। आज की उत्तर–आधुनिक कलीसिया में हम इसके शिकार बन चुके हैं। हमने दर्शक मानसिकता बना ली है। हमें उसकी इच्छा को पूरी करने में जल्दबाजी करने की जरूरत नहीं है। उसके कार्य को करने के लिए हम सेवकों को नियुक्त करते हैं। हमें उसका जीवन दूसरों से बाँटने की जरूरत नहीं है। हम उसका जीवन बाँटने के लिए सेवकों को नियुक्त करते हैं। वे हमारे लिए कार्यक्रमों की योजना बनाते हैं। वे हमसे बात करते हैं। हाँ, वे हमारे लिए खोए हुओं तक पहुँचते हैं। यही उनका काम है।

उसका वचन हमें यह नहीं बताता है। यह ऐसा नहीं कहता है। परमेश्वर इस पद में भी इसके झूठ को खोल रहा है। परिच्छेद को देखें। सेवकाई दल, पेशेवर लोग, चेले, किनारे पर खड़े होकर देख रहे हैं जब वास्तविक सेवकाई हो रही है। आप जानते हैं कौन कर रहा है? सामरी स्त्री; वह कटनी शुरू करती है। वह महान परमेश्वर में अपने सरल राई जैसे विश्वास को बाँट रही है। वह सेवकाई का कार्य कर रही है।

उसने किसी पेशेवर सेवक की माँग नहीं की। स्वयं मसीह उसके द्वारा सेवकाई कर रहे हैं। इस तस्वीर को देखें, "बोने वाला और काटने वाला दोनों एक साथ आनन्दित होते हैं।"

मैं इस अनिवार्यता के बारे में आपको अपने हृदय की एक झलक दिखाता हूँ। 2003 में मेरी पत्नी और मैं निरन्तर प्रार्थना में थे, जहाँ हम मूल रूप से यह पूछ रहे थे, "परमेश्वर, आपके लिए हमारे जीवन का सर्वोत्तम उपयोग क्या है? सेवकाई? मिशन क्षेत्र? या फिर नौकरी में रहकर अपना जीवन किसी दूसरे में उण्डेलना? यह क्या है, परमेश्वर?"

उस प्रश्न का उत्तर कम से कम आँशिक रूप से 2004 में मिल गया जब हम कीव, यूक्रेन के एक अनाथालय में एक बारह वर्षीय लड़के से मिले। परमेश्वर ने हमें विश्वास की यात्रा में आगे बढ़ाया और कागजी कार्यवाही के दौरान कठिन समयों पर पार पाने में सहायता की और हम उसे अपने एक और बच्चे के रूप में घर ले आए। जब हम वहाँ थे, मैं नहीं जानता क्यों, चाहे जो भी कारण हो, सरकार कई बार स्थितियों को कहीं अधिक मुश्किल बना देती है।

हम न्यायालय में सफल रहे। और हम बैठे इन्तजार कर रहे थे। हम कार के पीछे की सीट पर बैठे थे जहाँ हमारा अनुवादक हमारे साथ बैठा था। हम एक और अभिलेख की प्रतीक्षा कर रहे थे ताकि उसे घर लाने के लिए हमें अपना पासपोर्ट मिल सके। मुझे याद है कार में पीछे बैठकर मैं ने यह प्रार्थना की, "परमेश्वर, क्या आप इस कागज को लायेंगे ताकि हमें पासपोर्ट मिल सके, हम घर जा सकें, और अपना जीवन पुनः आरम्भ कर सकें?"

थोड़ी देर के लिए मैं सो गया। जागने पर मैं कार से निकला और सड़क पर कुछ कदम चला, सरकारी कार्यालय की इमारत के सामने, मैं ने लोगों को इधर–उधर जाते हुए देखा जिनके एक हाथ में सिगरेट और दूसरे हाथ में बीयर की बोतल थी, और चेहरे से खोए हुए लगते थे। और मुझे याद है परमेश्वर ने मुझ से कहा, "क्रिस, क्या तुम इन लोगों को देख रहे हो," वे हर जगह हैं। परमेश्वर ने कहा, "मैं इनमें से प्रत्येक से

प्रेम करता हूँ। इनके विद्रोह से निपटने के लिए मुझे हर कीमत चुकानी पड़ती है। इसलिए यह तुम्हारे अपने जीवन में वापस लौटने के बारे में नहीं है।"
आने वाले दिनों में उसने मुझ पर थोड़ा और स्पष्ट किया। हम घर पहुँच गए। 2005 में, परमेश्वर ने फिर से हमारी अगुवाई की कि हम अपने बच्चों के साथ कीव, यूक्रेन जाएँ, अपना समय और जरूरी धन खर्च करके किसी और को अपने साथ घर लेकर आएँ, एक और 12 वर्षीय बालक। हम इसमें सफल रहे। परमेश्वर की स्तुति हो हम सफल रहे। और हम अक्टूबर 2007 में इस शहर में वापस लौटे।

मेरे घर पर फोन आया और यह यूक्रेन से था, और पता चला कि मेरे दूसरे दत्तक पुत्र के 18 वर्षीय भाई की क्षय के कारण मृत्यु हो गई, जिसे पहले ईलाज किया जा सकता था। मैं ने निर्णय लिया कि मैं उसे लेकर उसके भाई के अन्तिम संस्कार में जाऊँगा।

आप निर्णायक अनिवार्यता के बारे में बात करना चाहते हैं। आप समाप्ति के बारे में, कटनी की वास्तविकता के बारे में बात करना चाहते हैं। लेकिन तस्वीर यह है, लकड़ी के बक्से के ऊपर नीला कपड़ा और रस्सी जिसके सहारे उस कब्र में खिसकाया जाता है। यह तस्वीर है। यह समाप्ति है। यह जीवन की वास्तविकता है जब आप केवल एक और व्यक्ति होते हैं।

दो दिनों बाद हम अपार्टमेन्ट मैनेजर के कार्यालय में बैठे उस अपार्टमेन्ट के बारे में बात कर रहे थे जो मेरे बेटे की दादी का था। हमने प्रतीक्षा की। मेरे बेटे के भाई की प्रेमिका हमारे पास मृत्यु प्रमाण पत्र लेकर आई। हम कार्यालय में प्रतीक्षा कर रहे थे और वह इसे लेकर आई। और मैं ने अपने अनुवादक के द्वारा उससे बात की और अनुवादक से उससे पूछने के लिए कहा कि क्या उसे धन की जरूरत थी। क्या उसे कुछ चाहिए? क्या मैं उसकी कोई मदद कर सकता हूँ? मुझे आशा थी कि मैं कुछ कर सकता हूँ।

उस समय अनुवादक ने वह बताया जो वह लड़की मुझ से कह रही थी। और आप जानते हैं उसने क्या कहा? वह मुझ पर चिल्लाई। उसने यह नहीं कहा, "हाँ, मुझे तुम्हारा धन चाहिए।" उसने कहा, "यह तुम्हारी गलती है। तुम्हारी गलती के कारण रसलैन मर गया।" उसने मुझे बुरा–भला कहा, मुझ पर चिल्लाई और कार्यालय से चली गई।

और मैं भावनात्मक रूप से ठिठक गया। यह सही नहीं है। वही बात जो आप कहते हैं। "वह मेरी गलती के कारण नहीं मरा है।" और समय बीतने के साथ मैं बौद्धिक स्तर पर सोचने लगा और उन कारणों की सूची

बनाने लगा कि उसके एक निवारणीय रोग से मरने में मेरी काई गलती नहीं है। परन्तु जब मैं उसके आत्मिक आयाम की जाँच करने लगा तो मुझे अपने आप से पूछना पड़ा, स्वयं परमेश्वर का सवाल, "परमेश्वर, क्या हो सकता है कि वह मेरी गलती के कारण मरा हो?"

मसीह की आँखें फसल की वास्तविकता को देखती हैं

चार महीने, उसके बाद कटनी है। क्या होता यदि मैं थोड़ा अधिक संवेदनशील होता? क्या होता यदि मैं ने जल्दी से कार्य किया होता? क्या होता यदि परमेश्वर के पहली बार कहने पर ही मेरा हृदय उसका प्रत्युत्तर देता?

मैं कई बार लोगों को कहते सुनता हूँ, वे कहते हैं, "हम इस सुसमाचार के साथ इस संसार के पीछे फिरने के लिए निर्णायक रूप से तैयार नहीं हैं।" वे मुझ से कहते हैं, "हमारे पास कोई ढाँचा नहीं है। हमारे पास कोई पद्धति नहीं है। यह बहुत अधिक है। यह अत्यधिक तीव्र है।" और मैं आपसे पूछना चाहता हूँ, "क्या वास्तव में? वास्तव में?"

यीशु मसीह कहते हैं, "चार महीने प्रतीक्षा मत करो। अभी करो।" हम दुकानदारों पर ध्यान ही नहीं देते हैं। अपना कार्यालय साफ करने वाले लोगों पर ध्यान ही नहीं देते हैं। बच्चों को विद्यालय से लाते समय कतार में जिन लोगों के पास हम खड़े होते हैं, उन्हें भी हम नजरअन्दाज कर देते हैं। वे हमें आकर्षित नहीं करते हैं। खेत तो खेत होता है। <u>खेतों में कोई आकर्षण नहीं होता, क्योंकि हम फसल की वास्तविकता को नहीं देखते हैं।</u>

सवाल यह हैः क्या हम इस पुस्तक पर विश्वास करते हैं? चार महीने इन्तजार न करें। अभी करें। <u>क्या हमारे लिए कटनी में अभी चार महीने शेष हैं, या हमारे अन्दर मसीह की अनिवार्यता अभी कटनी के लिए कह रही है?</u>

मैं चाहता हूँ आप प्रार्थना करें। याद रखें यदि मसीह का जीवन हमारे अन्दर है तो उसकी अनिवार्यता भी हमारे अन्दर होगी। परमेश्वर से कहें कि वह अपनी अनिवार्यता आपको बताए। आप में से कुछ लोगों ने कभी मसीह पर विश्वास नहीं किया होगा; आप कभी उस बिन्दू पर नहीं पहुँचे जहाँ पवित्र आत्मा मसीह से आपको मिलाया हो और आपने उस पर विश्वास किया हो। जैसे भी परमेश्वर आपकी अगुवाई करता है, अपने दिल की गहराई से पहली बार मसीह को पुकारें। यह आपका समय है।